Golden Research Thoughts
Vol -1 , ISSUE –9, March 2012
ISSN:- 2231-5063
Available online at www.aygrt.isrj.org

ORIGINAL ARTICLE

कृष्णा अग्निहोत्री की कहानीयों में चित्रित नारी संघर्ष
("एक अखंडित सत्य" "बिखराव" कहानीयों के संदर्भ में)

अर्चना कांबळे

हिंदी विभाग , श्री शिवाजी महाविद्यालय, बार्शी.

प्रस्तावना

भारतीय समाज में नारी मुक्ति का संघर्ष परिवर्तन की इच्छा से किया हुआ संघर्ष है | समाज में नारी को कभी भी व्यक्ति रूप में मान्यता नही की | एक मानवी की रूप में जो मान्यता उसे मिलनी चाहिए थी वह नहीं मिली | उसे पुरूष की वस्तु मानकर ही रखा गया जिसके कारण मानवी के रूप में उसकी चेतना का विकास नही हो सका | सुश्री महादेवी वर्मा के अनुसार "कष्ट सहते सहते क्लेश की तीव्रता के अनुभव करने की चेतना भी नही रही उसकी उपयुक्तता-अनुपयुक्तता पर विचार करना तो दूर की बात है | हमार समाज ने उसे पाषाण प्रतिमा के समान सर्वद एकरूप, एकरस, कंपन और विकार से रहित होकर जीने की आज्ञा की है | अत: युगों से इसी प्रकार जीवित रहने का प्रयास करते - करते यदी वह निर्जीव सी हो उठी तो आश्चर्य ही क्या है | हम जब बहुत समय तक अपने किसी अंग से उसकी शक्ति से अधिक कार्य लेते रहते हैं तो वह शिथिल और संज्ञाहीन -सा हुए बिना नही रहता | नारी जाती भी समाज को अपनी शक्ति से अधिक देकर अपनी सहनशक्ति से अधिक त्याग स्वीकार करके संज्ञाहिन-सी हो गई है |" १

बीसवीं सदी महिला जागरण की सदी रही है | इस काल में महिलाओं ने संघटित होकर अपने अधिकारों की लडाई लडी और उनका नया रूप सामने आया | नारी मुक्ति आंदोलन, नारी संघर्ष, सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकता ने नारी चेतना को विकसित किया | इन सब कारणों से समाज में नारी की स्थिति बदली और नारी के विभिन्न रूप उभरकर सामने आए | एक वर्ग विद्रोही बनकर उभरा तो दूसरा पुरानी परंपरा को ही लेकर चलता रहा | एक तीसरा वर्ग भी जो संतुलन में विश्वास करता है कुछ ऐसे भी है | जो इन तीनो रूपों से अलग-अलग अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखना चाहते है |

कृष्णा अग्निहोत्री व्दारा लिखीत "जिंदा आदमी कहानी" संग्रह में चित्रित कहानी च्एक अखंडित सत्यछ है | कहानी में प्रमुख स्त्री पात्र इला है | अभिलाष ने अपने पिता शिवनंदनजी की कठोर मर्यादापूर्ण नियमावली से तंग आकर ही तो क्रिश्चियन धर्म स्वीकार करना है | उसने क्रिश्चन धर्म को ईला से शादी की | कुछ वर्षो के बाद एक दिन अचानक श्रद्धा बदलकर उसके पास आकाशवाणी में पोस्ट हो गयी | अभिलाष उसके प्रति आकर्षित होता है | वह इला से प्रेम करता है और उसके सामने विवाह का प्रस्ताव भी रखता है | श्रद्धा प्रस्ताव को सुनकर कुछ दिन रूकने को कहती है | विवाह के पश्चात पाँच वर्ष बीते पर इला मॉ न बन सकी | कई जगह इलाज करावाया परंतु सभी जगह से निराशाजनक उत्तर मिलते गए | उसे जब मालूम होता है कि उसका पति अभिलाष श्रद्धा से प्यार करता है, तब उसने उसे विवाह की अनुमती दे देती है और कहती है, "जबरदस्ती का बंधन मजबूत और स्थायी हो भी नहीं सकता-तुम्हारा मुझसे जूडना लगता है, परिस्थिती के हार मात्र था इसलिए समय के साथ मेरी कमियां तुम्हे मुझसे दूर ले गी है |"२

कृष्णा अग्निहोत्री व्दारा लिखित "जिंदा आदमी कहानी संग्रह में चित्रित बिखराव" कहानी में संगिता नायिका है | संगिता बडी बहन है और उसकी छोटी बहन विनती है | उनके माँ की मृत्यु हेा गी थी संगीता तीन साल की थी | संगीता पर घर की सारी जिम्मेदारी पडी | विनती की वह मॉ, बनकर उसका पालन-पोषण करने लगी | संगीता के पिता की हार्ट फेल के कारण मृत्यू हो जाती है और भाई आवारा निकलता है | दोनों बहनें बडी हो गयी | संगीता को विज्ञापन विभाग में नौकरी मिलती है | उसकी मुलाखत सूजन से होती है | दोनों में प्यार होता है | शादी करने की इच्छा होते हुए भी वह विनती के कारण नही कर सकती | सुजान चूपचाप संगीता के माँग में सिंदूर भरता है | उसे पत्नी के रूप में स्वीकार करता है | आगे सुजन विनती से प्यार करने लगता है | विनती राजीव से विवाह करती है | यह बात संगीता को मालूम होती है | राजीव की परिस्थिती अच्छी नहीं है, उन्हें पल्लवी नामक बच्ची भी है | सूजन धीरे-धीरे संगीता से दूर जाता है | वह अकेलापन महसूस करने लगती है | सूजन विनती के घर जाकर आर्थिक मदद कर पल्लवी और उसके पति को खुश रखने का प्रयास करता है |

एक दिन संगीता विनती के घर जाती है | तो दूसरे ही दिन सूजन विनती और पल्लवी के लिए ढेर सारी चिजें लेकर आता है | तब वह विनती के आँखो में सुजन के प्रति प्रेम देखती है | संगीता देखती है आज सब खूष है और वह अकेली ही दु:खी है | जिस विनती के कारण उसने विवाह नहीं किया, खुशी से जीवन नहीं जिया, जिसकें लिए पूरा जीवन समर्पित किया | जीवनभर अपने छोटी बहन विनती को खुशी देने के लिए अनेक समस्याओं से जूझती रही, संघर्ष करती रही | यहां कहानी में संगीता का त्याग और उदात्तता दिखाई देती है | संगीता का संघर्ष बचपन से लेकर प्रोढावस्था तक दिखाई देता है |

इला ने अभिलाष से स्पष्ट रूप से कहा की वह दूसरा विवाह नही करेगी | आगे वह दोंनो का बसता एक आया बनकर सँभालेगी आया को कोई धर्म नही होता | आया तो दुसरी मॉ ही होती है तब अभिलाष को एक अखंडित सत्य का प्रकाश बांधता ही गया | इसके सामने एक ऐसी पूर्ण समर्पित गुणवती नारी

जिसकी महानता का कोई भी धर्म और कोई भी मानव नकार नहीं सकते थे | अभिलाष ने इला के बडप्पन को देखकर उसे अपनी तरफ खिंच लिया | वह इलास बरसों के बाद इस तरह प्यार कर रहा था, जैसे आज ही असे पाया है |

इसप्रकार कहानी में इला का सच्चा प्रेम, महानता, समर्पित भावना और पति को पाने के लिए किए हुए संघर्ष से वह पुनः अपने खोए हुए पति को पाती है |

संदर्भ :

१. श्रृंखला की कडियाँ - महादेवी वर्मा - पृ - ३८
२. "जिंदा आदमी "- एक अखंडित सत्य -कृष्णा अग्निहोत्री - पृ - ६५